University Grants Commission, New Delhi Recognized Journal No. 41311
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

सामाजिक चेतना के क्रांतिकारी ज्योतिपूंज : कबीर

मीनाक्षी कुमारी

(शोध–छात्रा),हिन्दी विभाग, बी॰आर॰ए॰ बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

सार–संक्षेप

निर्गुण भक्त कवियों में कबीर का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। भारतीय धर्म–साधना के इतिहास में कबीरदास ऐसे महान विचारक एवं प्रतिभाशाली कवि हैं, जिन्होंने शताब्दियों की सीमा का उल्लंघन कर दीर्घ काल तक जन–मानस का पथ आलोकित किया एवं सही अर्थों में जनजीवन का नायकत्व किया। अक्षर–ब्रह्म के परम साधक कबीरदास सामान्य अक्षर ज्ञान से रहित थे। उन्होंने निर्गुण भक्ति का मार्ग ज्ञानमार्गी है, का ज्ञान इस संसार को दिया एवं रहस्यवाद भी निर्गुण ब्रह्म पर ही आश्रित है। रहस्यवाद माधुर्य भाव की निर्गुण भक्ति ही है, यह भक्ति मूर्तिपूजा, कर्मकांड इत्यादि बाह्य आडंबरों का विरोध कर ईश्वर के निराकार रूप की भक्ति कर उसमें एकाकार होने व ज्ञान एवं प्रेम के द्वारा उस अलौकिक ईश्वर को प्राप्त करने पर बल देती है। निर्गुण भक्ति में प्रेम का विशेष स्थान है, प्रेम के बिना भक्ति संभव ही नहीं है, यह ज्ञान निर्गुण भक्त कबीर के द्वारा अवगत कराया है।

मुख्यशब्द– निर्गुण, ब्रह्म, भक्ति, मार्ग, परमात्मा, समाज, जाति–पांति, विष्वव्यापी

भारतीय धर्म साधना के इतिहास में कबीर महान विचारक एवं प्रतिभावान कवि है। इनका जन्म 1398 ई॰ में हुआ था। कबीर सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। मान्यता है कि कबीर लहरतारा नामक तालाब के किनारे मिले थे। भाग्यवश नीरू जुलाहा अपनी पत्नी नीमा के साथ वहाँ से गुजर रहे थे, वो अपने साथ इन्हें घर ले आए एवं इनका पालन–पोषण किया। कबीर गुरू रामानन्द के शिष्य थे। इनकी पत्नी का नाम लोई तथा पुत्र व पुत्री का नाम कमाल व कमाली था। इनका प्रारंभिक जीवन काशी व अंतिम जीवन मगहर में बीता। निरक्षण होने के पश्चात् भी कबीर बड़े–बड़े दार्शनिकों, विद्वानों के कथन को ठुकरा देते थे। तार्किकता के क्षेत्र में अत्यंत शुढक, हृदयहीन, तीक्ष्ण प्रतीत होने वाले कबीर भक्ति की भावधारा में बहते समय सबसे प्रथम दिखाई देते हैं। निर्गुण भक्ति का मार्ग ज्ञानमार्गी है। रहस्यवाद भी निर्गुण ब्रह्म पर ही आश्रित है। रहस्यवाद माधुर्य भाव की निर्गुण भक्ति ही है, यह भक्ति मूर्तिपूजा, कर्मकांड इत्यादि बाह्य आडंबरों का विरोध कर ईश्वर के निराकार रूप की भक्ति कर उसमें एकाकार होने व ज्ञान एवं प्रेम के द्वारा उस अलौकिक ईश्वर को प्राप्त करने पर बल देती है। निर्गुण भक्ति में प्रेम का विशेष स्थान है, प्रेम के बिना भक्ति संभव ही नहीं। निर्गुण भक्ति के माध्यम से समाज में समरसता लाने का प्रयास किया

गया। निर्गुण भक्ति का आदि स्त्रोत 'श्वेताश्वतर' उपनिषद है। निर्गुण संतों की विचारधारा के बीज सिद्ध व नाथ कवियों की रचनाओं में तो मिलते ही हैं, आदिकाल में नामदेव ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। निर्गुण भक्त कवियों में कबीर का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। भारतीय धर्म–साधना के इतिहास में कबीरदास ऐसे महान विचारक एवं प्रतिभाशाली कवि हैं, जिन्होंने शताब्दियों की सीमा का उल्लंघन कर दीर्घ काल तक जन–मानस का पथ आलोकित किया एवं सही अर्थों में जनजीवन का नायकत्व किया। अक्षर–ब्रह्म के परम साधक कबीरदास सामान्य अक्षर ज्ञान से रहित थे। उन्होंने अत्यंत स्पष्ट शब्दों में कहा था– ''मसि कागद छुऔ नहीं, कलम गहौ नहीं हाथ''।

कवि के रूप में कबीर जीवन के अत्यंत निकट है। सहजता उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है। उनके काव्य का आधार यथार्थ है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है – ''मैं कहता हूँ आँखन देखी, तु कहता कागद की लेखी। वे जन्म से विद्रोही, प्रकृति से समाज–सुधारक, कारणों से प्रेरित होकर धर्म–सुधारक, प्रगतिशील दार्शनिक एवं आवश्यकतानुसार कवि थे। उनके व्यक्तित्व का संपूर्ण प्रतिबिंब साहित्य में विद्यमान है।

कबीर के अनुसार सुंस्कृत समाज के निर्माण की एक ही आदर्श प्रेरणा हो सकती है – भक्ति। यही भक्ति व्यक्ति रूपी काँच को तुरंत कंचन में परिवर्तित कर सकती है। कबीर इस बात पर अत्यंत बल देते है कि भक्ति की महिमा से हीन हो जाने पर इस संसार की बार–बार दुर्गति हुई है, और होती रहेगी। भक्ति हीवह मजबूत तंतु है जो व्यक्ति और समाज में तारतम्य स्थापित कर सकती है। कबीर साहित्य में 'भक्ति और संत' शब्द पर्यायवाची अर्थ में प्रयुक्त हुए है। भारतीय साहित्य में परंपरा से प्राप्त 'संत' शब्द न केवल अनेकार्थक है, वह अर्थ विकास के क्रम में प्राप्त सभी अर्थों का समुच्चय भी है, और उसमें समाज–संलग्नता और जन–सामान्य विशेषकर उपेक्षित वर्गों की दयनीय स्थितियों के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण जागरूकता भी है। कबीर निर्गुण एवं निराकार परमात्मा के उपासक थे। कबीर ज्ञानमार्गी शाखा के कवि थे। उन्होंने ज्ञान का उपदेश देकर समाज को जागृत किया। कबीर के अनुसार ज्ञान और योग की साधना से ही ब्रह्म का साक्षात्कार संभव है। अतः उन्होंने बाह्य आडंबरों का विरोध करते हुए मन से परमात्मा का ध्यान करने का उपदेश दिया। जिसमें नाम की महता, प्रेम की महता, भक्ति एवं नीति, समाज–सुधार की भावना, रहस्य भावना को आत्मसात करने पर बल दिया है। कबीर भक्त कवि थे। भक्ति के प्रसार के क्रम में ही उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों, मूर्तिपूजा, हिंसा, माया, जाति–पाँति, छुआ–छूत आदि का जीवन भर विरोध किया और उनकी ज्यादातर रचनाओं में विद्रोह की भावना बलबती हुई है। कबीर ने साम्प्रदायिकता का पुरजोर विरोध किया है–**''हिन्दु कहे मोहे राम पियारा और तुरूक रहमाना,आपस में दोऊ लरि मुए, मरम न**

काहू जाना।''कबीर पर विभिन्न दर्शनों का प्रभावकबीर की अखण्डता, भक्ति और मानवतावादी प्रसंगों में आत्मदया काभी रूप लेती दिखती है। कबीर की सहज साधना पर कई धर्म–दर्शनोंके उदार तत्त्वों का प्रभाव था। ऐसे में वैष्णव शक्ति के प्रपत्तिवाद तथासमर्पण के आग्रह के कारण कबीर ईश्वर के सामने अपनी निरीहता कोउद्घाटित करते दिखे जैसे–**कबीर कूता राम का मोतिया मेरा नाउ।गले राम की जेवड़ी जित खेंचे उत जाउँ।।**कबीर ने हठयोग एवं कुण्डलिनी जागरण को सिद्धों, नाथों से लिया।कबीर ने सिद्धों के पंचमकारों (मुद्रा, मदिरा, मैथुन, मत्स्य, मांस) केआध्यात्मिक अर्थ लिए। मुद्रा का अर्थ ज्ञान, मदिरा का आध्यात्मिकजागरण, मैथुन का कुण्डलिनी जागरण व महाकुण्डलनी से मिलन,मत्स्य का कुण्डलिनी की गति व मांस का विषय वासनाओं से अर्थलिया। सिद्धों, नाथों ने जिस प्रकार रूढ़ियों व शास्त्रीय पाण्डित्य काविरोध किया, उसी प्रकार कबीर भी विरोध करते दिखे।**पण्डित और मसालची दोनों सूझे नाहिं।औरन को करे चाँदना आप अँधेरे माहिं।।**जिस प्रकार सिद्धों ने अ**स**पनी साधनागुरु की महत्ता पर बल दियाकबीर भी सद्गुरु को ईश्वर से बढ़कर मानते हैं।**तगुरु हम सौं रीझि कर एक कह्या प्रसंग। बरसया बादल प्रेम का भीग गया सब अंग।।**

सिद्धों, नाथों ने हठयोग साधना पर बल दिया। कबीर द्वारा नाद बिन्दुकी साधना षट्चक्रभेदन का प्रभाव दिखाई देता है। सिद्धों, नाथों नेतीनों नाड़ियों इड़ा, पिंगला व सुषुम्ना को ललना, रसना व अवधूतिकानाम दिया, जबकि कबीर ने इन्हें 'गंगा', 'जमुना', 'सरस्वती' नामदिया।कबीर ने योगियों के एकांगी दृष्टिकोण की आलोचना भी की–**सून मरे अजपा मरे अनहद हूँ मरि जाय।राम सनेही न मरे राम पे बारा जाय।।गगना पबना दोनों बिनसै, कहँ गया जोग तुम्हारा।।**कबीर की भाषा मुख्य रूप से ब्रज, अवधी एवं खड़ी बोली का मिश्रण है, जिसमें कहीं–कहीं भोजपुरी, पंजाबी एवं राजस्थान की भाषा के तत्व भी उपलब्ध होते है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को पंचमेल खिचड़ी या साधुक्कड़ी भाषा कहा है, जिसमें विभिन्न कवियों बोलियों के शब्द उपलब्ध होते है। डॉ॰ बिन्दुमाधव मिश्र के अनुसार कबीर के पदों की भाषा प्रमुखतः ब्रज साखियों की राजस्थानी तथा खड़ी बोली और रमैनी की भाषा प्रधानरूप से अवधी है। आचार्य श्यामसुंदर दास का मत है कि कबीर की भाषा का निर्णय करना टेढ़ी खीर है, क्योंकि वह खिचड़ी है। खड़ी बोली, पंजाबी, राजस्थानी, अरबी, फारसी, आदि अनेक भाषाओं का पुट भी उनकी उक्तियों पर चढ़ा हुआ है। कबीर का ज्ञान विस्तृत था, उन्होंने पर्याप्त देशाटन भी किया था, अतः उनकी भाषा में अनेक बोलियों के शब्द समाहित है। कबीर महान समाज–सुधारक थे। उनके समकालीन समाज में अनेक अंध–विश्वासों, आडंबरों, कुरीतियों एवं विविध धर्मों का बोलबाला था। कबीर ने इन सबका विरोध करते हुए, समाज को एक नई दिशा देने का पूर्ण प्रयास किया। उन्होंने जाति–पाँति के भेदभाव को दूर करते हुए शोषित जनों के उद्धार का प्रयत्न

किया तथा सामाजिक असमानता को दूर करने का प्रयास किया। कबीर साहित्य में सम्मानित तीन शब्द – साधु, संत और भक्त के विशेष दायित्व बोध को प्रकाशित करते हैं। सामाजिक संश्लेषण की इसी चिंता ने कबीर के विद्रोही रूप को संवारा है। जिसके पास किसी भी समुदाय से टकराने के लिए पर्याप्त आत्मबल, निर्भिकता और प्रतिभा है। वह सामाजिक तथ्यहीन–तर्करहित विश्वासों को खंडित करते है, क्योंकि सम्पद्रायों के निःशक्तताओं से केवल सामाजिक विघटन और विकेन्द्रीकरण को ही बल मिलता था। किसी भी प्रकार सामाजिक मोक्ष के प्रति वे चिंताशील नहीं थे। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने लिखा है कि – संतों ने लौकिक जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन पर अत्यधिक बल दिया, परंतु ऐसा मान लेना उन लोगों के प्रति अन्याय करना ही कहा जा सकता है जिन्होंने अपनी रचनाओं का एक बहुत बड़ा अंश, सामाजिक व्यवस्था, अनैतिकता तथा आवश्यक विडंबनाओं के विरोध में ही निर्मित किया है तथा जिन्होंने परलोकवाद तक की कड़ी आलोचना की है। कबीर ने तो साफ–साफ कहा है–निर्वाण की उपलब्धि तभी हुई जब मैंने, अपने–पराए में भेद ही खत्म कर दिया और सबको समान मानने लगा। ब्रह्म के दो स्वरूप है – सगुण व निर्गुण। निर्गुण निराकार ईश्वर की भक्ति है निर्गुण भक्ति में ईश्वर को घट–घट का स्वामी माना गया है। इस भक्ति में बोध का विशेष महत्व है। यह भक्ति मानव को एक ऐसे विश्वव्यापी धर्म से जोडती है, जहाँ भेद नहीं होता। इस भक्ति में सहज–साधना की महत्ता है।

संत साहित्य के अंतर्गत हमें सर्वत्र सामाजिक विषमता का घोर विरोध देखने को मिलता है, और इसके साम्यभाव की प्रतिष्ठा भी दिखाई पड़ती है। संतों की साम्यभावना का मूल आधार उनके द्वारा प्राणियों की एक ही परमात्मा से उत्पन्न होने की आस्था है, जो सर्वत्र परमात्मा रूप में देखने की लालसा जागृत कर देती है।निष्कर्षतः कबीर ने अपने उपरोक्त आदर्शों की प्रयोगशाला में स्वयं को परिमार्जित कर सामाजिक क्रांति के ज्योतिपूंज के रूप में जनमानस को चैतन्यता प्रदान की।

संदर्भः

1. संत साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत, ले॰ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, प्र॰–राजपाल एंड सन्स। प्रथम संस्करण, पृष्ठ–21
2. वही, पृ॰–35
3. कबीर वचनावली संख्या 'हरिऔध' साखी –पृ॰ 391
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, ले॰–डा॰ नगेन्द्र, डा॰ हरलाल, मयूर बुक्स 4226/1 अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली – 110002, पृ॰–107–121
5. कबीर की भक्ति भावना, ले॰–विलियम्स डायर प्र॰ – मैकमिलन कम्पनी, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1976, पृ॰–119
6. वही, पृ॰ – 225